॥ श्रीहरिः ॥

706

श्रीगायत्रीसहस्रनामस्तोत्रम्

गीताप्रेस, गोरखपुर

706

॥ श्रीहरिः ॥

श्रीगायत्रीसहस्रनामस्तोत्रम्

गीताप्रेस, गोरखपुर

प्रकाशक—गोविन्दभवन-कार्यालय, गीताप्रेस, गोरखपुर

सं० २०१५ से २०५३ तक	८०,०००
सं० २०५५ दसवाँ संस्करण	१०,०००
	योग ९०,०००

मूल्य—दो रुपये

मुद्रक—गीताप्रेस, गोरखपुर—२७३००५
फोन : ३३४७२१

॥ श्रीरस्तु ॥

गायत्रीसहस्रनामस्तोत्रम्

ध्यानम्

मुक्ताविद्रुमहेमनीलधवलच्छायैर्मुखैस्त्रीक्षणै-
र्युक्तामिन्दुनिबद्धरत्नमुकुटां तत्त्वार्थवर्णात्मिकाम्।
गायत्रीं वरदाभयाङ्कुशकशाः शुभ्रं कपालं गुणं
शङ्खं चक्रमथारविन्दयुगलं हस्तैर्वहन्तीं भजे॥

ॐ तत्काररूपा तत्त्वज्ञा तत्पदार्थस्वरूपिणी।
तपस्स्वाध्यायनिरता तपस्विजनसंनुता॥ १॥

तत्कीर्तिगुणसम्पन्ना तथ्यवाक्च तपोनिधिः।
तत्त्वोपदेशसम्बन्धा तपोलोकनिवासिनी॥ २॥

तरुणादित्यसंकाशा तप्तकाञ्चनभूषणा।
तमोऽपहारिणी तन्त्री तारिणीताररूपिणी॥ ३॥

तलादिभुवनान्तःस्था तर्कशास्त्रविधायिनी।
तन्त्रसारा तन्त्रमाता तन्त्रमार्गप्रदर्शिनी॥ ४॥

तत्त्वा तन्त्रविधानज्ञा तन्त्रस्था तन्त्रसाक्षिणी।
तदेकध्याननिरता तत्त्वज्ञानप्रबोधिनी॥ ५॥

तन्नाममन्त्रसुप्रीता तपस्विजनसेविता।
सकाररूपा सावित्री सर्वरूपा सनातनी॥ ६॥

संसारदुःखशमनी सर्वयागफलप्रदा।
सकला सत्यसंकल्पा सत्यासत्यप्रदायिनी ॥ ७ ॥

संतोषजननी सारा सत्यलोकनिवासिनी।
समुद्रतनयाराध्या सामगानप्रिया सती ॥ ८ ॥

समाना सामदेवी च समस्तसुरसेविता।
सर्वसम्पत्तिजननी सद्गुणा सकलेष्टदा ॥ ९ ॥

सनकादिमुनिध्येया समानाधिकवर्जिता।
साध्या सिद्धा सुधावासा सिद्धिः साध्यप्रदायिनी ॥ १० ॥

सद्युगाराध्यनिलया समुत्तीर्णा सदाशिवा।
सर्ववेदान्तनिलया सर्वशास्त्रार्थगोचरा ॥ ११ ॥

सहस्त्रदलपद्मस्था सर्वज्ञा सर्वतोमुखी।
समया समयाचारा सदसद्ग्रन्थिभेदिनी ॥ १२ ॥

सप्तकोटिमहामन्त्र माता सर्वप्रदायिनी।
सगुणा सम्भ्रमा साक्षा सर्वचैतन्यरूपिणी ॥ १३ ॥

सत्कीर्तिः सात्त्विकी साध्वी सच्चिदानन्दरूपिणी।
संकल्परूपिणी संध्या सालग्रामनिवासिनी ॥ १४ ॥

सर्वोपाधिविनिर्मुक्ता सत्यज्ञानप्रबोधिनी।
विकाररूपा विप्रश्रीर्विप्राराधनतत्परा ॥ १५ ॥

विप्रप्रीर्विप्रकल्याणी विप्रवाक्यस्वरूपिणी।
विप्रमन्दिरमध्यस्था विप्रवादविनोदिनी ॥ १६ ॥

विप्रोपाधिविनिर्भेत्री विप्रहत्याविमोचनी।
विप्रत्राता विप्रगोत्रा विप्रगोत्रविवर्धिनी ॥ १७ ॥

विप्रभोजनसंतुष्टा विष्णुरूपा विनोदिनी।
विष्णुमाया विष्णुवन्द्या विष्णुगर्भा विचित्रिणी ॥ १८ ॥

वैष्णवी विष्णुभगिनी विष्णुमायाविलासिनी ।
विकाररहिता विश्वविज्ञानघनरूपिणी ॥ १९ ॥

विबुधा विष्णुसंकल्पा विश्वामित्रप्रसादिनी ।
विष्णुचैतन्यनिलया विष्णुस्वा विश्वसाक्षिणी ॥ २० ॥

विवेकिनी वियद्रूपा विजया विश्वमोहिनी ।
विद्याधरी विधानज्ञा वेदतत्त्वार्थरूपिणी ॥ २१ ॥

विरूपाक्षी विराड्रूपा विक्रमा विश्वमङ्गला ।
विश्वम्भरा समाराध्या विश्वभ्रमणकारिणी ॥ २२ ॥

विनायकी विनोदस्था वीरगोष्ठीविवर्धिनी ।
विवाहरहिता विन्ध्या विन्ध्याचलनिवासिनी ॥ २३ ॥

विद्याविद्याकरी विद्या विद्याविद्याप्रबोधिनी ।
विमला विभवा वेद्या विश्वस्था विविधोज्ज्वला ॥ २४ ॥

वीरमध्या वरारोहा वितन्त्रा विश्वनायिका।
वीरहत्याप्रशमनी विनम्रजनपालिनी ॥ २५ ॥

वीरधीर्विविधाकारा विरोधिजननाशिनी।
तुकाररूपा तुर्यश्रीस्तुलसीवनवासिनी ॥ २६ ॥

तुरङ्गी तुरगारूढा तुलादानफलप्रदा।
तुलामाघस्नानतुष्टा तुष्टिपुष्टिप्रदायिनी ॥ २७ ॥

तुरङ्गमप्रसंतुष्टा तुलिता तुल्यमध्यगा।
तुङ्गोत्तुङ्गा तुङ्गकुचा तुहिनाचलसंस्थिता ॥ २८ ॥

तुम्बुरादिस्तुतिप्रीता तुषारशिखरीश्वरी।
तुष्टा च तुष्टिजननी तुष्टलोकनिवासिनी ॥ २९ ॥

तुलाधारा तुलामध्या तुलस्था तुर्यरूपिणी।
तुरीयगुणगम्भीरा तूर्यनादस्वरूपिणी ॥ ३० ॥

तूर्यविद्यालास्यतुष्टा तूर्यशास्त्रार्थवादिनी।
तुरीयशास्त्रतत्त्वज्ञा तूर्यवादविनोदिनी॥ ३१॥

तूर्यनादान्तनिलया तुर्यानन्दस्वरूपिणी।
तुरीयभक्तिजननी तुर्यमार्गप्रदर्शिनी॥ ३२॥

वकाररूपा वागीशी वरेण्या वरसंविधा।
वरा वरिष्ठा वैदेही वेदशास्त्रप्रदर्शिनी॥ ३३॥

विकल्पशमनी वाणी वाञ्छितार्थफलप्रदा।
वयःस्था च वयोमध्या वयोऽवस्थाविवर्जिता॥ ३४॥

वन्दिनी वादिनी वर्या वाङ्मयी वीरवन्दिता।
वानप्रस्थाश्रमस्था च वनदुर्गा वनालया॥ ३५॥

वनजाक्षी वनचरी वनिता विश्वमोहिनी।
वसिष्ठवामदेवादिवन्द्यावन्द्यस्वरूपिणी ॥ ३६॥

वैद्या वैद्यचिकित्सा च वषट्कारी वसुन्धरा।
वसुमाता वसुत्राता वसुजन्मविमोचनी ॥ ३७ ॥

वसुप्रदा वासुदेवी वासुदेवमनोहरी।
वासवार्चितपादश्रीर्वासवारिविनाशिनी ॥ ३८ ॥

वागीशी वाङ्मनस्था च वशिनी वनवासभूः।
वामदेवी वरारोहा वाद्यघोषणतत्परा ॥ ३९ ॥

वाचस्पतिसमाराध्या वेदमाता विनोदिनी।
रेकाररूपा रेवा च रेवातीरनिवासिनी ॥ ४० ॥

राजीवलोचना रामा रागिणी रतिवन्दिता।
रमणी रामजप्ता च राज्यपा रजताद्रिगा ॥ ४१ ॥

राकिणी रेवती रक्षा रुद्रजन्मा रजस्वला।
रेणुकारमणी रम्या रतिवृद्धा रता रतिः ॥ ४२ ॥

रावणानित्यदानन्दा राजश्री राजशेखरी।
रणमध्या रथारूढा रविकोटिसमप्रभा ॥ ४३ ॥

रविमण्डलमध्यस्था रजनी रविलोचना।
रथाङ्गपाणी रक्षोघ्नी रागिणी रावणार्चिता ॥ ४४ ॥

रम्भादिकन्यकाराध्या राज्यदा राज्यवर्धिनी।
रजताद्रीशसक्थिस्था रम्या राजीवलोचना ॥ ४५ ॥

रम्यवाणी रमाराध्या राज्यधात्री रतोत्सवा।
रेवती च रतोत्साहा राजहृद्रोगहारिणी ॥ ४६ ॥

रङ्गप्रवृद्धमधुरा रङ्गमण्डपमध्यगा।
रञ्जिता राजजननी रम्या राकेन्दुमध्यगा ॥ ४७ ॥

राविणी रागिणी रञ्ज्या राजराजेश्वरार्चिता।
राजन्वती राजनीती रजताचलवासिनी ॥ ४८ ॥

राघवार्चितपादश्री राघवी राघवप्रिया।
रत्नसागरमध्यस्था रत्नद्वीपनिवासिनी ॥ ४९ ॥

रत्नप्राकारमध्यस्था रत्नमण्डपमध्यगा।
रत्नाभिषेकसंतुष्टा रत्नाङ्गी रत्नदायिनी ॥ ५० ॥

णिकाररूपिणी नित्या नित्यतृप्ता निरञ्जना।
निद्रात्ययविशेषज्ञा नीलजीमूतसंनिभा ॥ ५१ ॥

नीवारशूकवत्तन्वी नित्यकल्याणरूपिणी।
नित्योत्सवा नित्यपूज्या नित्यानन्दस्वरूपिणी ॥ ५२ ॥

निर्विकल्पा निर्गुणस्था निश्चिन्ता निरुपद्रवा।
निस्संशया निरीहा च निर्लोभा नीलमूर्धजा ॥ ५३ ॥

निखिलागममध्यस्था निखिलागमसंस्थिता।
नित्योपाधिविनिर्मुक्ता नित्यकर्मफलप्रदा ॥ ५४ ॥

नीलग्रीवा निराहारा निरञ्जनवरप्रदा।
नवनीतप्रिया नारी नरकार्णवतारिणी ॥ ५५ ॥

नारायणी निरीहा च निर्मला निर्गुणप्रिया।
निश्चिन्ता निगमाचारनिखिलागमवेदिनी ॥ ५६ ॥

निमेषा निमिषोत्पन्ना निमेषाण्डविधायिनी।
निवातदीपमध्यस्था निर्विघ्ना नीचनाशिनी ॥ ५७ ॥

नीलवेणी नीलखण्डा निर्विषा निष्कशोभिता।
नीलांशुकपरीधाना निन्दाघ्नी च निरीश्वरी ॥ ५८ ॥

निश्वासोच्छ्वासमध्यस्था नित्ययानविलासिनी।
यंकाररूपा यन्त्रेशी यन्त्री यन्त्रयशस्विनी ॥ ५९ ॥

यन्त्राराधनसंतुष्टा यजमानस्वरूपिणी।
योगिपूज्या यकारस्था यूपस्तम्भनिवासिनी ॥ ६० ॥

यमघ्नी यमकल्पा च यशःकामा यतीश्वरी।
यमादियोगनिरता यतिदुःखापहारिणी ॥ ६१ ॥

यज्ञा यज्वा यजुर्गेया यज्ञेश्वरपतिव्रता।
यज्ञसूत्रप्रदा यष्ट्री यज्ञकर्मफलप्रदा ॥ ६२ ॥

यवाङ्कुरप्रिया यन्त्री यवदघ्नी यवार्चिता।
यज्ञकर्त्री यज्ञभोक्त्री यज्ञाङ्गी यज्ञवाहिनी ॥ ६३ ॥

यज्ञसाक्षी यज्ञमुखी यजुषी यज्ञरक्षणी।
भकाररूपा भद्रेशी भद्रकल्याणदायिनी ॥ ६४ ॥

भक्तप्रिया भक्तसखी भक्ताभीष्टस्वरूपिणी।
भगिनी भक्तसुलभा भक्तिदा भक्तवत्सला ॥ ६५ ॥

भक्तचैतन्यनिलया भक्तबन्धविमोचना।
भक्तस्वरूपिणी भाग्या भक्तारोग्यप्रदायिनी ॥ ६६ ॥

भक्तमाता भक्तगम्या भक्ताभीष्टप्रदायिनी।
भास्करी भैरवी भोग्या भवानी भयनाशिनी ॥ ६७ ॥

भद्रात्मिका भद्रदायी भद्रकाली भयंकरी।
भगनिष्यन्दिनी भूम्नी भवबन्धविमोचनी ॥ ६८ ॥

भीमा भवसखी भङ्गी भङ्गुरा भीमदर्शिनी।
भल्ली भल्लीधरा भीरुर्भेरुण्डा भीमपापहा ॥ ६९ ॥

भावज्ञा भोगदात्री च भवघ्नी भूतिभूषणा।
भूतिदा भूमिदात्री च भूपतित्वप्रदायिनी ॥ ७० ॥

भ्रामरी भ्रमरी भारी भवसागरतारिणी।
भण्डासुरवधोत्साहा भाग्यदा भावनोदिनी ॥ ७१ ॥

गोकाररूपा गोमाता गुरुपत्नी गुरुप्रिया।
गोरोचनप्रिया गौरी गोविन्दगुणवर्धिनी ॥ ७२ ॥

गोपालचेष्टासंतुष्टा गोवर्धनविवर्धिनी ।
गोविन्दरूपिणी गोप्त्री गोकुलानां विवर्धिनी ॥ ७३ ॥

गीता गीतप्रिया गेया गोदा गोरूपधारिणी ।
गोपी गोहत्यशमनी गुणिनी गुणिविग्रहा ॥ ७४ ॥

गोविन्दजननी गोष्ठा गोप्रदा गोकुलोत्सवा ।
गोचरी गौतमी गोप्त्री गोमुखी गुरुवासिनी ॥ ७५ ॥

गोपाली गोमयी गुम्फा गोष्ठी गोपुरवासिनी ।
गरुडी गमनश्रेष्ठा गारुडी गरुडध्वजा ॥ ७६ ॥

गम्भीरा गण्डकी गङ्गा गरुडध्वजवल्लभा ।
गगनस्था गयावासा गुणवृत्तिर्गुणोद्भवा ॥ ७७ ॥

देकाररूपा देवेशी दृग्रूपा देवतार्चिता ।
देवराजेश्वरार्धाङ्गी दीनदैन्यविमोचनी ॥ ७८ ॥

देशकालपरिज्ञाना देशोपद्रवनाशिनी।
देवमाता देवमोहा देवदानवमोहिनी॥ ७९॥

देवेन्द्रार्चितपादश्रीर्देवदेवप्रसादिनी।
देशान्तरी देशरूपा देवालयनिवासिनी॥ ८०॥

देशभ्रमणसंतुष्टा देशस्वास्थ्यप्रदायिनी।
देवयाना देवता च देवसैन्यप्रपालिनी॥ ८१॥

वकाररूपा वाग्देवी वेदमानसगोचरा।
वैकुण्ठदेशिका वेद्या वायुरूपा वरप्रदा॥ ८२॥

वक्रतुण्डार्चितपदा वक्रतुण्डप्रसादिनी।
वैचित्र्यरूपा वसुधा वसुस्थाना वसुप्रिया॥ ८३॥

वषट्कारस्वरूपा च वरारोहा वरासना।
वैदेहीजननी वेद्या वैदेहीशोकनाशिनी॥ ८४॥

वेदमाता वेदकन्या वेदरूपा विनोदिनी।
वेदान्तवादिनी चैव वेदान्तनिलयप्रिया ॥ ८५ ॥

वेदश्रवा वेदघोषा वेदगीताविनोदिनी।
वेदशास्त्रार्थतत्त्वज्ञा वेदमार्गप्रदर्शिनी ॥ ८६ ॥

वेदोक्तकर्मफलदा वेदसागरवाडवा।
वेदवन्द्या वेदगुह्या वेदाश्वरथवाहिनी ॥ ८७ ॥

वेदचक्रा वेदवन्द्या वेदाङ्गी वेदवित्कविः।
सकाररूपा सामान्ता सामगानविचक्षणा ॥ ८८ ॥

साम्राज्ञी सामरूपा च सदानन्दप्रदायिनी।
सर्वदृक्संनिविष्टा च सर्वसम्प्रेषिणी सहा ॥ ८९ ॥

सव्यापसव्यदा सव्यसध्रीची च सहायिनी।
सकला सागरा सारा सार्वभौमस्वरूपिणी ॥ ९० ॥

संतोषजननी सेव्या सर्वेशी सर्वरञ्जनी।
सरस्वती समाराध्या सामदा सिन्धुसेविता॥ ९१॥

सम्मोहिनी सदामोहा सर्वमाङ्गल्यदायिनी।
समस्तभुवनेशानी सर्वकामफलप्रदा॥ ९२॥

सर्वसिद्धिप्रदा साध्वी सर्वज्ञानप्रदायिनी।
सर्वदारिद्र्यशमनी सर्वदुःखविमोचनी॥ ९३॥

सर्वरोगप्रशमनी सर्वपापविमोचनी।
समदृष्टिः समगुणा सर्वगोप्त्री सहायिनी॥ ९४॥

सामर्थ्यवाहिनी सांख्या सान्द्रानन्दपयोधरा।
संकीर्णमन्दिरस्थाना साकेतकुलपालिनी॥ ९५॥

संहारिणी सुधारूपा साकेतपुरवासिनी।
सम्बोधिनी समस्तेशी सत्यज्ञानस्वरूपिणी॥ ९६॥

सम्पत्करी समानाङ्गी सर्वभावसुसंस्थिता।
संध्यावदनसुप्रीता सन्मार्गकुलपालिनी ॥ ९७ ॥

संजीविनी सर्वमेधा सभ्या साधुसुपूजिता।
समिद्धा सामिधेनी च सामान्या सामवेदिनी ॥ ९८ ॥

समुत्तीर्णा सदाचारा संहारा सर्वपावनी।
सर्पिणी सर्पमाता च सामदानसुखप्रदा ॥ ९९ ॥

सर्वरोगप्रशमनी सर्वज्ञत्वफलप्रदा।
संक्रमा समदा सिन्धुः सर्गादिकरणक्षमा ॥ १०० ॥

संकटा संकटहरा सकुङ्कुमविलेपना ।
सुमुखी सुमुखप्रीता समानाधिकवर्जिता ॥ १०१ ॥

संस्तुता स्तुतिसुप्रीता सत्यवादी सदास्पदा।
धीकाररूपा धीमाता धीरा धीरप्रसादिनी ॥ १०२ ॥

धीरोत्तमा धीरधीरा धीरस्था धीरशेखरा।
धृतिरूपा धनाढ्या च धनपा धनदायिनी ॥ १०३ ॥

धीरूपा धीरवन्द्या च धीप्रभा धीरमानसा।
धीगेया धीपदस्था च धीशानी धीप्रसादिनी ॥ १०४ ॥

मकाररूपा मैत्रेयी महामङ्गलदेवता।
मनोवैकल्यशमनी मलयाचलवासिनी ॥ १०५ ॥

मलयध्वजराजश्रीर्मायामोहविभेदिनी ।
महादेवी महारूपा महाभैरवपूजिता ॥ १०६ ॥

मनुप्रीता मन्त्रमूर्तिर्मन्त्रवैश्या महेश्वरी।
मत्तमातङ्गगमना मधुरा मेरुमण्डपा ॥ १०७ ॥

महागुप्ता महाभूतमहाभयविनाशिनी।
महाशौर्या मन्त्रिणी च महावैरिविनाशिनी ॥ १०८ ॥

महालक्ष्मीर्महागौरी महिषासुरमर्दिनी।
मही च मण्डलस्था च मधुरागमपूजिता ॥ १०९ ॥

मेधा मेधाकरी मेध्या माधवी मधुमर्दिनी।
मन्त्रा मन्त्रमयी मान्या मायामाधवमन्त्रिणी ॥ ११० ॥

मायादूरा च मायावी मायाज्ञा मानदायिनी।
मायासंकल्पजननी मायामयविनोदिनी ॥ १११ ॥

मायाप्रपञ्चशमनी मायासंहाररूपिणी।
मायामन्त्रप्रसादा च माया जनविमोहिनी ॥ ११२ ॥

महापथा महाभोगा महाविघ्नविनाशिनी।
महानुभावा मन्त्राढ्या महामङ्गलदेवता ॥ ११३ ॥

हिकाररूपा हृद्या च हितकार्यप्रवर्धिनी।
हेयोपाधिविनिर्मुक्ता हीनलोकविनाशिनी ॥ ११४ ॥

ह्रींकारी ह्रींमती हृद्या ह्रींदेवी ह्रींस्वभाविनी।
ह्रींमन्दिरा हितकरी हृष्टा च ह्रींकुलोद्भवा॥ ११५॥

हितप्रज्ञा हितप्रीता हितकारुण्यवर्धिनी।
हिताशिनी हितक्रोधा हितकर्मफलप्रदा॥ ११६॥

हिमा हैमवती हैम्नी हेमाचलनिवासिनी।
हिमागजा हितकरी हितकर्मस्वभाविनी॥ ११७॥

धींकाररूपा धिषणा धर्मरूपा धनेश्वरी।
धनुर्धरा धराधारा धर्मकर्मफलप्रदा॥ ११८॥

धर्माचारा धर्मसारा धर्ममध्यनिवासिनी।
धनुर्विद्या धनुर्वेदा धन्या धूर्तविनाशिनी॥ ११९॥

धनधान्या धेनुरूपा धनाढ्या धनदायिनी।
धनेशी धर्मनिरता धर्मराजप्रसादिनी॥ १२०॥

धर्मस्वरूपा धर्मेशी धर्माधर्मविचारिणी।
धर्मसूक्ष्मा धर्मगेहा धर्मिष्ठा धर्मगोचरा ॥ १२१ ॥

योकाररूपा योगेशी योगस्था योगरूपिणी।
योग्या योगीशवरदा योगमार्गनिवासिनी ॥ १२२ ॥

योगासनस्था योगेशी योगमायाविलासिनी।
योगिनी योगरक्ता च योगाङ्गी योगविग्रहा ॥ १२३ ॥

योगवासा योगभोग्या योगमार्गप्रदर्शिनी।
योकाररूपा योधाढ्या योद्ध्रीयोधसुतत्परा ॥ १२४ ॥

योगिनी योगिनीसेव्या योगज्ञानप्रबोधिनी।
योगेश्वरप्राणनाथा योगीश्वरहृदिस्थिता ॥ १२५ ॥

योगा योगक्षेमकर्त्री योगक्षेमविधायिनी।
योगराजेश्वराराध्या योगानन्दस्वरूपिणी ॥ १२६ ॥

नकाररूपा नादेशी नामपारायणप्रिया।
नवसिद्धिसमाराध्या नारायणमनोहरी ॥ १२७ ॥

नारायणी नवाधारा नवब्रह्मार्चिताङ्घ्रिका।
नगेन्द्रतनयाराध्या नामरूपविवर्जिता ॥ १२८ ॥

नरसिंहार्चितपदा नवबन्धविमोचनी।
नवग्रहार्चितपदा नवमीपूजनप्रिया ॥ १२९ ॥

नैमित्तिकार्थफलदा नन्दितारिविनाशिनी।
नवपीठस्थिता नादा नवर्षिगणसेविता ॥ १३० ॥

नवसूत्रविधानज्ञा नैमिषारण्यवासिनी।
नवचन्दनदिग्धाङ्गी नवकुङ्कुमधारिणी ॥ १३१ ॥

नववस्त्रपरीधाना नवरत्नविभूषणा।
नव्यभस्मविदिग्धाङ्गी नवचन्द्रकलाधरा ॥ १३२ ॥

प्रकाररूपा प्राणेशी प्राणसंरक्षणी परा।
प्राणसंजीविनी प्राच्या प्राणिप्राणप्रबोधिनी ॥ १३३ ॥

प्रज्ञा प्राज्ञा प्रभापुष्पा प्रतीची प्रबुधप्रिया।
प्राचीना प्राणिचित्तस्था प्रभा प्रज्ञानरूपिणी ॥ १३४ ॥

प्रभातकर्मसंतुष्टा प्राणायामपरायणा।
प्रायज्ञा प्रणवा प्राणा प्रवृत्तिः प्रकृतिःपरा ॥ १३५ ॥

प्रबन्धा प्रथमा चैव प्रज्ञा प्रारब्धनाशिनी।
प्रबोधनिरता प्रेक्ष्या प्रबन्धा प्राणसाक्षिणी ॥ १३६ ॥

प्रयागतीर्थनिलया प्रत्यक्षपरमेश्वरी।
प्रणवाद्यन्तनिलया प्रणवादिः प्रजेश्वरी ॥ १३७ ॥

चोकाररूपा चोरघ्नी चोरबाधाविनाशिनी।
चैतन्यचेतनस्था च चतुरा च चमत्कृतिः ॥ १३८ ॥

चक्रवर्तिकुलाधारा चक्रिणी चक्रधारिणी।
चित्तगेया चिदानन्दा चिद्रूपा चिद्विलासिनी ॥ १३९ ॥

चिन्ता चित्तप्रशमनी चिन्तितार्थफलप्रदा।
चाम्पेयी चम्पकप्रीता चण्डी चण्डाट्टहासिनी ॥ १४० ॥

चण्डेश्वरी चण्डमाता चण्डमुण्डविनाशिनी।
चकोराक्षी चिरप्रीता चिकुरा चिकुरालका ॥ १४१ ॥

चैतन्यरूपिणी चैत्री चेतना चित्तसाक्षिणी।
चित्रा चित्रविचित्राङ्गी चित्रगुप्तप्रसादिनी ॥ १४२ ॥

चलना चक्रसंस्था च चाम्पेयी चलचित्रिणी।
चन्द्र मण्डलमध्यस्था चन्द्रकोटिसुशीतला ॥ १४३ ॥

चन्द्रानुजसमाराध्या चन्द्रा चण्डमहोदरी।
चर्चितारिश्चन्द्रमाता चन्द्रकान्ता चलेश्वरी ॥ १४४ ॥

चराचरनिवासी च चक्रपाणिसहोदरी।
दकाररूपा दत्तश्रीर्दारिद्र्यच्छेदकारिणी ॥ १४५ ॥

दत्तात्रेयस्य वरदा दयालुर्दीनवत्सला।
दक्षाराध्या दक्षकन्या दक्षयज्ञविनाशिनी ॥ १४६ ॥

दक्षा दाक्षायणी दीक्षा दृष्टा दक्षवरप्रदा।
दक्षिणा दक्षिणाराध्या दक्षिणामूर्तिरूपिणी ॥ १४७ ॥

दयावती दमस्वान्ता दनुजारिर्दयानिधिः।
दन्तशोभानिभा देवी दमनी दाडिमस्तनी ॥ १४८ ॥

दण्डा च दमयित्री च दण्डिनी दमनप्रिया।
दण्डकारण्यनिलया दण्डकारिविनाशिनी ॥ १४९ ॥

दंष्ट्राकरालवदना दण्डशोभा दरोदरी।
दरिद्रारिष्टशमनी दम्या दमनपूजिता ॥ १५० ॥

दानवार्चितपादश्रीर्द्रविणा द्राविणी दया।
दामोदरी दानवारिर्दामोदरसहोदरी ॥ १५१ ॥

दात्री दानप्रिया दाम्नी दानश्रीर्द्विजवन्दिता।
दन्तिगा दण्डिनी दूर्वा दधिदुग्धस्वरूपिणी ॥ १५२ ॥

दाडिमीबीजसंदोहदन्तपङ्क्तिविराजिता।
दर्पणा दर्पणस्वच्छा द्रुममण्डलवासिनी ॥ १५३ ॥

दशावतारजननी दशदिग्दैवपूजिता।
दमा दशदिशा दृश्या दशदासी दयानिधिः ॥ १५४ ॥

देशकालपरिज्ञाना देशकालविशोधिनी।
दशम्यादिकलाराध्या दशग्रीवविरोधिनी ॥ १५५ ॥

दशापराधशमनी दशवृत्तिफलप्रदा।
यात्काररूपिणी याज्ञी यादवी यादवार्चिता ॥ १५६ ॥

ययातिपूजनप्रीता याज्ञिकी याजकप्रिया।
यजमाना यदुप्रीता यामपूजाफलप्रदा ॥ १५७ ॥

यशस्विनी यमाराध्या यमकन्या यतीश्वरी।
यमादियोगसंतुष्टा योगीन्द्रहृदया यमा ॥ १५८ ॥

यमोपाधिविनिर्मुक्ता यशस्यविधिसंनुता।
यवीयसी युवप्रीता यात्रानन्दा यतीश्वरी ॥ १५९ ॥

योगप्रिया योगगम्या योगध्येया यथेच्छगा।
यागप्रिया याज्ञसेनी योगरूपा यथेष्टदा ॥ १६० ॥

श्रीगायत्रीदिव्यसहस्रनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

ॐ ॐ ॐ

अघनाशकगायत्रीस्तोत्रम्

आदिशक्ते जगन्मातर्भक्तानुग्रहकारिणि।
सर्वत्र व्यापिकेऽनन्ते श्रीसंध्ये ते नमोऽस्तु ते॥
त्वमेव संध्या गायत्री सावित्री च सरस्वती।
ब्राह्मी च वैष्णवी रौद्री रक्ता श्वेता सितेतरा॥
प्रातर्बाला च मध्याह्ने यौवनस्था भवेत्पुनः।
वृद्धा सायं भगवती चिन्त्यते मुनिभिः सदा॥
हंसस्था गरुडारूढा तथा वृषभवाहिनी।
ऋग्वेदाध्यायिनी भूमौ दृश्यते या तपस्विभिः॥

यजुर्वेदं पठन्ती च अन्तरिक्षे विराजते।
सा सामगापि सर्वेषु भ्राम्यमाणा तथा भुवि॥
रुद्रलोकं गता त्वं हि विष्णुलोकनिवासिनी।
त्वमेव ब्रह्मणो लोकेऽमर्त्यानुग्रहकारिणी॥
सप्तर्षिप्रीतिजननी माया बहुवरप्रदा।
शिवयोः करनेत्रोत्था ह्यश्रुस्वेदसमुद्भवा॥
आनन्दजननी दुर्गा दशधा परिपठ्यते।
वरेण्या वरदा चैव वरिष्ठा वरवर्णिनी॥

गरिष्ठा च वराही च वरारोहा च सप्तमी।
नीलगङ्गा तथा संध्या सर्वदा भोगमोक्षदा॥
भागीरथी मर्त्यलोके पाताले भोगवत्यपि।
त्रिलोकवाहिनी देवी स्थानत्रयनिवासिनी॥
भूर्लोकस्था त्वमेवासि धरित्री शोकधारिणी।
भुवो लोके वायुशक्तिः स्वर्लोके तेजसां निधिः॥
महर्लोके महासिद्धिर्जनलोके जनेत्यपि।
तपस्विनी तपोलोके सत्यलोके तु सत्यवाक्॥

कमला विष्णुलोके च गायत्री ब्रह्मलोकगा।
रुद्रलोके स्थिता गौरी हरार्धाङ्गनिवासिनी॥
अहमो महतश्चैव प्रकृतिस्त्वं हि गीयसे।
साम्यावस्थात्मिका त्वं हि शबलब्रह्मरूपिणी॥
ततः परापरा शक्तिः परमा त्वं हि गीयसे।
इच्छाशक्तिः क्रियाशक्तिर्ज्ञानशक्तिस्त्रिशक्तिदा॥
गङ्गा च यमुना चैव विपाशा च सरस्वती।
सरयूर्देविका सिन्धुर्नर्मदेरावती तथा॥

गोदावरी शतद्रुश्च कावेरी देवलोकगा।
कौशिकी चन्द्रभागा च वितस्ता च सरस्वती॥
गण्डकी तापिनी तोया गोमती वेत्रवत्यपि।
इडा च पिङ्गला चैव सुषुम्णा च तृतीयका॥
गान्धारी हस्तिजिह्वा च पूषापूषा तथैव च।
अलम्बुषा कुहूश्चैव शङ्खिनी प्राणवाहिनी॥
नाडी च त्वं शरीरस्था गीयसे प्राक्तनैर्बुधैः।
हृतपद्मस्था प्राणशक्तिः कण्ठस्था स्वप्ननायिका॥

तालुस्था त्वं सदाधारा बिन्दुस्था बिन्दुमालिनी।
मूले तु कुण्डली शक्तिर्व्यापिनी केशमूलगा॥
शिखामध्यासना त्वं हि शिखाग्रे तु मनोन्मनी।
किमन्यद् बहुनोक्तेन यत्किंचिज्जगतीत्रये॥
तत्सर्वं त्वं महादेवि श्रिये संध्ये नमोऽस्तु ते।
इतीदं कीर्तितं स्तोत्रं संध्यायां बहुपुण्यदम्॥
महापापप्रशमनं महासिद्धिविधायकम्।
य इदं कीर्तयेत् स्तोत्रं संध्याकाले समाहितः॥

अपुत्रः प्राप्नुयात् पुत्रं धनार्थी धनमाप्नुयात्।
सर्वतीर्थतपोदानयज्ञयोगफलं लभेत्॥
भोगान् भुक्त्वा चिरं कालमन्ते मोक्षमवाप्नुयात्।
तपस्विभिः कृतं स्तोत्रं स्नानकाले तु यः पठेत्॥
यत्र कुत्र जले मग्नः संध्यामज्जनजं फलम्।
लभते नात्र संदेहः सत्यं सत्यं च नारद॥
शृणुयाद्योऽपि तद्भक्त्या स तु पापात् प्रमुच्यते।
पीयूषसदृशं वाक्यं संध्योक्तं नारदेरितम्॥

श्री श्री श्री

॥ श्रीहरिः ॥

गीताप्रेस, गोरखपुरसे प्रकाशित सहस्त्रनाम स्तोत्र

१- श्रीविष्णुसहस्त्रनाम
२- श्रीशिवसहस्त्रनाम
३- श्रीरामसहस्त्रनाम
४- श्रीगणेशसहस्त्रनाम
५- श्रीसूर्यसहस्त्रनाम
६- श्रीहनुमत्सहस्त्रनाम
७- श्रीलक्ष्मीसहस्त्रनाम
८- श्रीसीतासहस्त्रनाम
९- श्रीराधिकासहस्त्रनाम
१०- श्रीगायत्रीसहस्त्रनाम
११- श्रीगङ्गासहस्त्रनाम